C. S. (Main) Exam : 2011

Sl. No.

D-DTN-L-IOB

HINDI

Paper II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours | *Maximum Marks : 300*

INSTRUCTIONS

*Candidates should attempt Question Nos. 1 and 5 which are compulsory, and any **three** of the remaining questions, selecting at least **one** question from each Section.*

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

*Answers must be written in **Hindi**.*

(Contd.)

Section 'A'

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए उनका काव्य-सौन्दर्य उद्‌घाटित कीजिए : 20×3=60

(क) नवौं पँवरि पर दसौं दुआरू।
तेहि पर बाज राज घरिआरू।
घरी सो बैठि गनैं घरिआरी।
पहर पहर सो आपनि बारी।
जबहिं घरी पूजी वह मारा।
घरी घरी घरिआर पुकारा।
परा जो डाँड जगत सब डाँडा।
का निचिंत माँटी कर भाँडा।

(ख) गज-बाजि-घटा, भले भूरि भटा,
बनिता सुत भौंह तकै सब वै।
धरनी धन धाम सरीर भलौ,
सुरलोकहु चाहि इहै सुख स्वै॥
सब फोकट साटक है तुलसी,
अपनो न कछू सपनो दिन द्वै।
जरि जाउ सो जीवन जानकीनाथ !
जियै जग में तुम्हरो बिनु ह्वै॥

(ग) नयनों का नयनों से गोपन प्रिय संभाषण।
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान पतन॥
काँपते हुए किसलय, झरते पराग समुदय।
गाते खग नव परिचय, तरु मलय-वलय।

2. (क) ''कबीर की भाषा सधुक्कड़ी थी'' — इस कथन के औचित्य पर सोदाहरण विचार कीजिए।

(ख) ''सूर का काव्य अप्रस्तुत विधान की खान है'' — इसको सप्रमाण सिद्ध कीजिए। 30×2=60

3. (क) 'कामायनी उज्ज्वल चेतना का सुन्दर इतिहास है' — इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

(ख) अज्ञेय की कविता व्यक्तित्व के खोज की कविता है या व्यक्तित्व के विलयन की ? 'असाध्यबीणा' के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 30×2=60

4. (क) ''जो कोई रस-रीति को समुझै चाहे सार।
पढ़ै बिहारी-सतसई कविता को सिंगार ॥''
— इस उक्ति के आधार पर बिहारी की 'रस-रीति' की विवेचना कीजिए।

(ख) जायसी कृत 'पद्मावत' और तुलसीकृत 'राम चरित मानस' की काव्य-भाषा का तुलनात्मक आकलन कीजिए। 30×2=60

Section 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए उनके अभिव्यक्तिपरक सौन्दर्य को उद्‌घाटित कीजिए : 20×3=60

(क) भक्ति संबंधहीन सिद्धान्तमार्ग निश्चयात्मिका बुद्धि को चाहे व्यक्त हों, पर प्रवर्तक मन को अव्यक्त रहते हैं। वे मनोरंजनकारी तभी लगते हैं, जब किसी व्यक्ति के जीवन-क्रम के रूप में देखे जाते हैं। शील की विभूतियाँ अनन्त रूपों में दिखाई पड़ती हैं। जब इन रूपों पर मनुष्य मोहित होता है, तब सात्विक शील की ओर आप से आप आकर्षित होता है।

(ख) उपनिषदों के 'नेति-नेति' से ही गौतम का अनात्मवाद पूर्ण है। यह प्रचीन महर्षियों का क्रथित सिद्धान्त 'मध्यमा-प्रतिपदा' के नाम से संसार में प्रचारित हुआ। व्यक्ति-रूप में आत्मा के सदृश कुछ नहीं है।

(ग) सौन्दर्य का ऐसा साक्षात्कार मैंने कभी नहीं किया। जैसे वह सौन्दर्य अस्पृश्य होते हुए भी मांसल हो। मुझे अनुभव हुआ कि वह क्या है, जो भावना को कविता का रूप देता है। क्यों कोई पर्वत-शिखरों को सहलाती हुई मेघमालाओं में खो जाता है !

6. (क) 'भारत-दुर्दशा' में तत्कालीन समाज का जो प्रतिबिम्बन हुआ है, वह आज कहाँ तक प्रासंगिक है ? युक्तियुक्त विवेचना कीजिए।

(ख) " 'गोदान' न केवल कृषक-जीवन का महाकाव्य है, अपितु समूचे युग की व्यथा-कथा है",

— इस कथन का पक्षापक्ष-विमर्श प्रस्तुत कीजिए।

30×2=60

7. (क) 'मैला आँचल' 'ग्राम कथा' की नव्य कलात्मक परिणति है।

— इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(ख) नयी कहानी ने पूर्ववर्त्ती कहानी का कहाँ किस रूप में अतिक्रमण किया है ? 'एक दुनिया समानांतर' के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 30×2=60

8. (क) 'बालकृष्ण भट्ट 'हँसमुख गद्य' के प्रणेता हैं।' — सोदाहरण समझाइए।

(ख) कुबेर नाथ राय के निबंधों में लालित्य का अनुपात ज्यादा है, या वैदुष्य का ? विचार कीजिए। 30×2=60